50 वां अंक वर्ष 2022 महादेवी वर्मा विशेषांक

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

गिल्लू यामा

नीलांबरा

अभिव्यक्ति

गीतपर्व पथ के साथी

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,

पश्चिम रेलवे

चर्चगेट, मुंबई – 400 020

हिंदी दिवस - 2022 के अवसर पर निदेशक कार्यालय, अहमदाबाद में आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेते हुए कार्मिक।

हिंदी दिवस - 2022 के अवसर पर मुख्यालय, चर्चगेट में आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेते हुए कार्मिक

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है
महात्मा गांधी

सितम्बर 2022

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री धीरेन माथुर, महानिदेशक लेखापरीक्षा

संरक्षक

श्री सतिश एन. वासनिक, निदेशक

संपादकीय

श्री भारत भूषण, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

श्री सुशील कुमार राम, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

परामर्शदाता मंडल

श्री अखिलेश कुमार सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री पूनम चंद सैनी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री विक्रम कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रकाशन व्यवस्था

श्रीमती शुभा बी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री भारत भूषण, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

श्री सुशील कुमार राम, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

संपर्क सूत्र: दूरभाष 022-22030189, फ़ैक्स 022-22054338, रेलवे 090-22361

रचनाओं की मौलिकता का दायित्व रचनाकारों का है एवं इसमें दिए गए विचार उनके अपने हैं।

****

विषय सूची

1)	मुख्य संरक्षक का संदेश .....महानिदेशक लेखापरीक्षा	3
2)	संरक्षक का संदेश .....निदेशक	4
3)	संपादकीय .....वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक	5
4)	राजभाषा नीति संबंधी मुख्य निदेश	6-7
5)	महादेवी वर्मा का परिचय	8-12
6)	महादेवी वर्मा की एक मशहूर कहानी (गिल्लू)	13-15
7)	जिंदगी समंदर की लहरों सी है .....श्री दिनेश खापरे	16
8)	भारत मेरी शान है.....भाग्यश्री पत्नी श्री दिनेश खापरे	17
9)	ऑनलाइन कक्षाएं .....श्रीमती शिखा कुमारी	18-19
10)	ग्लोबल वार्मिंग .....श्री एन के गुप्ता	20-21
11)	गुजर रही है जिंदगी .....श्री गुलाब सिंह	22
12)	टॉम एंड जेरी .....श्रीमती नंदिनी कासारे	23
13)	महिला सशक्तिकरण .....श्री अखिलेश सिंह	24-26
14)	उड़ना चाहता हूँ .....जय प्रकाश	27-28
15)	कलम के सिपाही .....श्री विवेक कुमार	29
16)	एक कवि ..... हुस्ने आलम	30-31
17)	नींद ..... श्री वीरेंद्र प्रताप सिंह	32
18)	समय .....श्रीमती भारती वर्मा	33
19)	ध्वज का महत्व ..... श्री प्रदीप कुमार	34
20)	गरम पानी पीने के फायदे .....श्री पूनम चंद सैनी	35
21)	जज़्बात ..... श्री भारत भूषण	36
22)	माँ ..... श्री नीतिन कुमार परमार	37
23)	अब पहले जैसे बात नहीं ..... श्री आशीष कुमार	38-39
24)	भोजन .....हर्षिता सिंह सुपुत्री श्री अरुण कुमार सिंह	40
25)	मेरे पिता .....श्रीमती निष्ठा भसीन	41-42
26)	राजस्थान – आमेर का किला.....श्री अरुण कुमार सिंह	43-45
27)	हिंदी की अंग्रेजी को चुनौती ..... श्री नीरज ढींगरा	46
28)	योग ..... श्री विकास ब्रह्मक्षत्रीय	47
29)	स्वतंत्र होकर भी हम सब गुलाम हैं..... श्री शशिभूषण सिंह	48
30)	हिन्दी पखवाड़ा वर्ष 2021 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं के नाम	49
31)	हिन्दी दिवस रिपोर्ट वर्ष 2021	50

मुख्य संरक्षक का संदेश

यह अति प्रसन्नता का विषय है कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी हमारी हिंदी गृह पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है और यह इसका 50 वां विशेषांक है। इस अंक में हमारे कार्यालय के समस्त सदस्यों का भरपूर योगदान रहा है जिन्होनें अपनी-अपनी रुचि व ज्ञान अनुसार लेखन के विविध आयामों को अपनी ही शैली में लेखनीबद्ध किया है जोकि कविता से आरम्भ होकर संस्मरण तक का सफर तय करते हैं। आज की व्यस्त जिंदगी और कार्यालयीन जिम्मेदारियों के बावजूद ऐसा कर पाना निसंदेह एक बड़ी उपलब्धि और अपने आप में ही एक गर्व का विषय है।

संपादक मंडल व समस्त कार्मिकों को मेरी ओर से इस सहर्ष संयुक्त प्रयास के लिए अशेष शुभकामनाएं।

धीरेन माथुर
महानिदेशक लेखापरीक्षा,
पश्चिम रेलवे

संदेश

भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का एक अभिन्न अंग और सशक्त माध्यम है। यदि किसी व्यक्ति की भाषा समृद्ध है तो निश्चय ही व्यक्ति के ज्ञान का स्तर उत्तम प्रकार का है। यही भाषा आपसी सौहार्द एवं परस्पर स्नेह को बनाए रखने में अपनी अहम भूमिका निभाती है। कार्यालय स्तर की बात करें तो राजभाषा अर्थात हिंदी इसमें प्रथम सोपान है। केंद्र सरकार की राजभाषा नीति के आदेशों और राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अंतर्गत निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रकाशित की जाने वाली हिंदी गृह पत्रिकाएं इस दिशा में एक मील का पत्थर साबित हो रहीं हैं। हमारा कार्यालय भी इस दिशा में उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा है और हमारी हिंदी गृह पत्रिका का 50वां विशेषांक इसमें निसंदेह सहायक होगा।

सर्व कर्मचारी वृंद, संपादक मंडल व रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएं ।

सतिश एन. वासनिक
निदेशक

सम्पादकीय

आज सम्पूर्ण विश्व कोरोना नामक माहमारी के चंगुल में फंसा निरीह पक्षी की भांति छटपटा रहा है । सदियों से चली आ रही परम्पराएं टूट रहीं हैं और व्याकुल जनमानस अतीत से बचे जीवन अंश के साथ भविष्य की अनजान परतों में जीवन व्यापन की नई संभावनाएं तलाशने में जुटा है। जब इस विकट समय में सबकुछ तेजी से बदल रहा है तो भाषा भी अछूती कैसे रह सकती है। वास्तविक दूरी बढ़ी है तो आभासी दुनिया की दूरी और भी कम हो गई है, और इस आभासी दुनिया में अपनी पहचान दर्ज कराने का पहला और अनिवार्य साधन हमारी भाषा है। भारतीय परिवेश की बात करें तो यह हिंदी है। इस आभासी दुनिया में जब हम कम्प्यूटर या मोवाइल स्क्रीन पर " आपका स्वागत है " लिखा पाते हैं तो सहजता अनुभव होने लगती है। इसी अनुभव को और अधिक सहज करने की दिशा में एक कदम है हमारी हिंदी गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का 50वां अंक ।

आशा करते है कि यह अंक समसामयिक महत्व के विविध आयामों पर प्रकाश डालते हुए हमारें सभी पाठकों द्वारा सराहा जाएगा।

भारत भूषण एवं
सुशील कुमार राम
हिन्दी अनुवादक

राजभाषा नीति संवंधी प्रमुख निदेश

1. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्टे , प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टे व सरकारी कागजात, संविदा, करार, अनुज्ञापत्र,निविदा सूचनाएं और निविदा प्रपत्र द्विभाषिक रुप में, अंग्रेजी और हिंदी, दोनों में जारी किए जाएं। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 6 के अंतर्गत ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्ति का दायित्व यह सुनिश्चित करना होगा कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार,निष्पादित अथवा जारी किए जाएं।

2. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5 के अनुसार केंद्र सरकार के कार्यालयों से हिंदी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिंदी मे ही दिया जाना है।

3. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के अनुसार केंद्र सरकार के जिन कार्यालयों के 80 प्रतिशत कार्मिकों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया हो, उन कार्यालयों क नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएं। इसके अंतर्गत अधिसूचित बैंकों की शाखाओं में निम्नलिखित कार्य हिंदी में किए जाएं :-ग्राहकों द्वारा भरे गए आवेदनों और ग्राहकों की सहमति से अंग्रेजी में भरे गए आवेदनों पर जारी किए जाने वाले मांग ड्राफ्ट, भुगतान आदेश, क्रेडिट कार्ड, सभी प्रकार की सूचियां, विवरणियां,सावधि जमा रसीदें,चैक बुक संबंधी पत्रादि, दैनिक बही, मस्टररोल, प्रेषण बही, पास बुक, लॉग बुक में प्रविष्टियां, प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र,सुरक्षा एवं ग्राहक सेवा संबंधी कार्य, नये खाते खोलना,लिफाफों पर पते लिखना, कर्मचारियों के यात्रा भत्ते, अवकाश, भविष्य निधि, आवास निर्माण अग्रिम, चिकित्सा संबंधी कार्य, बैठकों की कार्यसूची, कार्यवृत्त आदि।

4. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) के अनुसार केंद्र सरकार, ऐसे अधिसूचित कार्यालयों के हिंदी में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को टिप्पण, प्रारुपण और अन्य उन शासकीय कार्यों को केवल हिंदी में करने के लिए आदेश जारी कर सकती है, जैसा कि आदेश में विनिर्दिष्ट हो।

5. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 11 के अनुसार सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया साहित्य, रजिस्टरों के प्रारुप और शीर्षक, नामपट्ट,साइन बोर्ड, पत्र शीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिंदी और अंग्रेजी में होंगी। तदनुसार, केंद्र सरकार के कार्यालयों से अपेक्षा है कि वे सभी मैनुअल, संहिताओं, एवं प्रक्रिया संबंधी असांविधिक साहित्य से संबंधित अन्य प्रक्रियात्मक साहित्य अनुवाद के लिए केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में भेजें।

6. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह सुनिश्चित करे कि राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम के प्रावधानों तथा इनके अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रुप से अनुपालन हो तथा इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त एवं प्रभावकारी जांच बिंदु बनाए जाएं।

7. राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय ने केंद्रीय हिंदी समिति की 31 वीं बैठक के कार्यवृत में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए गए सुझावों पुन: बल दिया है। ये सुझाव है:- सरकारी हिंदी और सामाजिक हिंदी के अंतर को कम करना, देश की दूसरी भाषाओं से हिंदी को और समृद्ध करने के लिए उपाय करना, दूसरी भाषाओं के अच्छे शब्दों को हिंदी में ग्रहण करना, दूसरी भारतीय भाषाओं से अच्छे शब्दों को खोजकर हिंदी भाषा में जोड़ना, हिंदी में अनुवाद सरल भाषा में सुनिश्चित करना जिससे सरकारी भाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार मे बाधक नहीं, सहायक हो।

8. हिंदीतर राज्यों में बोर्ड, साइन बोर्ड, नामपट्ट तथा दिशा संकेतकों के लिए क्षेत्रीय भाषा, हिंदी तथा अंग्रेजी, इसी क्रम में, प्रयोग की जानी चाहिए।

9. प्रशिक्षण और कार्यशालाओं सहित राजभाषा हिंदी ,संबंधी कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालय में बैठने के लिए अच्छा व समुचित स्थान एवं अन्य आवश्यक सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाएं ताकि वे अपने दायित्वों का निर्वाह ठीक से कर सकें।

10. हमें अपने कार्य-व्यवहार में आम जीवन में प्रचलित शब्दों के प्रयोग पर बल देना चाहिए ताकि सामान्य नागरिक सरकारी नीतियों/कार्यक्रमों के बारे में सरल हिंदी में जानकारी प्राप्त कर सकें।

11. राजभाषा विभाग ने भारत सरकार के सभी सचिवों/विभिन्न सरकारी संगठनों के प्रमुखों से आग्रह किया है कि जब वे प्रत्येक माह वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक की अध्यक्षता करें तो वे उनमें हिंदी में सरकारी काम-काज में हुई प्रगति की भी समीक्षा करें और अपने संगठन में राजभाषा अधिनियम तथा नियमों के विभिन्न उपबंधो के कार्यान्वयन के बारें में चर्चा करें।

साथ ही, संयुक्त सचिव(प्रशासन)/संगठन के प्रशासनिक प्रमुख को हिंदी कार्यान्वयन का तथा वर्ष की प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करने का उत्तरदायित्व सौंपा जाए।

हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है
महात्मा गांधी

महादेवी वर्मा (26 मार्च 1907 — 11 सितम्बर 1987) हिन्दी भाषा की कवयित्री थीं। वे हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक मानी जाती हैं। आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें *आधुनिक मीरा* के नाम से भी जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें "हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती भी कहा है। महादेवी ने स्वतन्त्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रुदन को देखा, परखा और करुण होकर अन्धकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की। न केवल उनका काव्य बल्कि उनके सामाज सुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति चेतना भावना भी इस दृष्टि से प्रभावित रहे। *दीपशिखा* में वह जन-जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई और उसने केवल पाठकों को ही नहीं समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया।

उन्होंने खड़ी बोली हिन्दी की कविता में उस कोमल शब्दावली का विकास किया जो अभी तक केवल बृजभाषा में ही संभव मानी जाती थी। इसके लिए उन्होंने अपने समय के अनुकूल संस्कृत और बांग्ला के कोमल शब्दों को चुनकर हिन्दी का जामा पहनाया। संगीत की जानकार होने के कारण उनके गीतों का नाद-सौंदर्य और पैनी उक्तियों की व्यंजना शैली अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने अध्यापन से अपने कार्यजीवन की शुरूआत की और अन्तिम समय तक वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं। उनका बाल-विवाह हुआ परन्तु उन्होंने अविवाहित की भाँति जीवन-यापन किया। प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ-साथ कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थीं। उन्हें हिन्दी साहित्य के सभी महत्त्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है। भारत के साहित्य आकाश में महादेवी वर्मा का नाम ध्रुव तारे

की भाँति प्रकाशमान है। वे पशु पक्षी प्रेमी थी। 27 अप्रैल 1982 को भारतीय साहित्य में अतुलनीय योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से इन्हें सम्मानित किया गया था।

जीवनी

जन्म और परिवार

महादेवी का जन्म 26 मार्च 1907 को प्रातः 8 बजे फ़र्रुख़ाबाद उत्तर प्रदेश, भारत में हुआ। उनके परिवार में लगभग 200 वर्षों या सात पीढ़ियों के बाद पहली बार पुत्री का जन्म हुआ था। अतः बाबा बाबू बाँके विहारी जी हर्ष से झूम उठे और इन्हें घर की देवी — महादेवी मानते हुए पुत्री का नाम महादेवी रखा। उनके पिता श्री गोविंद प्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्राध्यापक थे। उनकी माता का नाम हेमरानी देवी था। हेमरानी देवी बड़ी धर्म परायण, कर्मनिष्ठ, भावुक एवं शाकाहारी महिला थीं। वे प्रतिदिन कई घंटे पूजा-पाठ तथा रामायण, गीता एवं विनय पत्रिका का पारायण करती थीं और संगीत में भी उनकी अत्यधिक रुचि थी। महादेवी वर्मा के मानस बंधुओं में सुमित्रानन्दन पन्त एवं निराला का नाम लिया जा सकता है, जो उनसे जीवन पर्यन्त राखी बँधवाते रहे। निराला जी से उनकी अत्यधिक निकटता थी, उनकी पुष्ट कलाइयों में महादेवी जी लगभग चालीस वर्षों तक राखी बाँधती रहीं।

शिक्षा

महादेवी जी की शिक्षा इन्दौर में मिशन स्कूल से प्रारम्भ हुई साथ ही संस्कृत, अंग्रेज़ी, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही। बीच में विवाह जैसी बाधा पड़ जाने के कारण कुछ दिन शिक्षा स्थगित रही। विवाहोपरान्त महादेवी जी ने 1919 में क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद में प्रवेश लिया और कॉलेज के छात्रावास में रहने लगीं। 1921 में महादेवी जी ने आठवीं कक्षा में प्रान्त भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। यहीं पर उन्होंने अपने काव्य जीवन की शुरुआत की। वे सात वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगी थीं और 1925 तक जब उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की, वे एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी कविताओं का प्रकाशन होने लगा था। कालेज में सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ उनकी घनिष्ठ मित्रता हो गई। 1932 में जब उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम॰ए॰ पास किया तब तक उनके दो कविता संग्रह *नीहार* तथा *रश्मि* प्रकाशित हो चुके थे।

कार्यक्षेत्र

महादेवी का कार्यक्षेत्र लेखन, सम्पादन और अध्यापन रहा। उन्होंने इलाहाबाद में प्रयाग महिला विद्यापीठ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया। यह कार्य अपने समय में महिला-शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम था। इसकी वे प्रधानाचार्य एवं कुलपति भी रहीं। 1923 में उन्होंने महिलाओं की प्रमुख

पत्रिका 'चाँद' का कार्यभार संभाला। 1930 में नीहार, 1932 में रश्मि, 1934 में नीरजा, तथा 1936 में सांध्यगीत नामक उनके चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए। 1939 में इन चारों काव्य संग्रहों को उनकी कलाकृतियों के साथ वृहदाकार में *यामा* शीर्षक से प्रकाशित किया गया। उन्होंने गद्य, काव्य, शिक्षा और चित्रकला सभी क्षेत्रों में नए आयाम स्थापित किये। इसके अतिरिक्त उनकी 18 काव्य और गद्य कृतियां हैं जिनमें *मेरा परिवार*, *स्मृति की रेखाएं*, *पथ के साथी*, *शृंखला की कड़ियाँ* और अतीत के चलचित्र प्रमुख हैं। सन 1955 में महादेवी जी ने इलाहाबाद में साहित्यकार संसद की स्थापना की और पं इलाचंद्र जोशी के सहयोग से साहित्यकार का सम्पादन संभाला। यह इस संस्था का मुखपत्र था। उन्होंने भारत में महिला कवि सम्मेलनों की नीव रखी। इस प्रकार का पहला अखिल भारतवर्षीय कवि सम्मेलन 15 अप्रैल 1933 को सुभद्रा कुमारी चौहान की अध्यक्षता में प्रयाग महिला विद्यापीठ में सम्पन्न हुआ। महिलाओं व शिक्षा के विकास के कार्यों और जनसेवा के कारण उन्हें समाज-सुधारक भी कहा गया है। उनके सम्पूर्ण गद्य साहित्य में पीड़ा या वेदना के कहीं दर्शन नहीं होते बल्कि अदम्य रचनात्मक रोष समाज में बदलाव की अदम्य आकांक्षा और विकास के प्रति सहज लगाव परिलक्षित होता है।

उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद नगर में बिताया। 11 सितम्बर 1987 को इलाहाबाद में रात 9 बजकर 30 मिनट पर उनका देहांत हो गया।

प्रमुख कृतियाँ

1. निहार (1930)
2. रश्मि (1932)
3. नीरजा (1934)
4. संध्यागीत (1936)
5. दीपशिखा (1942)
6. सप्तपर्णा (अनूदित 1959)
7. प्रथम आयाम (1974)
8. अग्निरेखा (1990)

पुरस्कार व सम्मान

डाक टिकट

उन्हें प्रशासनिक, अर्धप्रशासनिक और व्यक्तिगत सभी संस्थाओँ से पुरस्कार व सम्मान मिले।

- 1943 में उन्हें 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' एवं 'भारत भारती' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद 1952 में वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद की सदस्या मनोनीत की गयीं। 1956 में भारत सरकार ने उनकी साहित्यिक सेवा के लिये 'पद्म भूषण' की उपाधि

दी। 1971 में साहित्य अकादमी की सदस्यता ग्रहण करने वाली वे पहली महिला थीं। 1988 में उन्हें मरणोपरांत भारत सरकार की पद्म विभूषण उपाधि से सम्मानित किया गया।

- सन 1969 में विक्रम विश्वविद्यालय, 1977 में कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल, 1980 में दिल्ली विश्वविद्यालय तथा 1984 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने उन्हें डी.लिट की उपाधि से सम्मानित किया।
- इससे पूर्व महादेवी वर्मा को 'नीरजा' के लिये 1934 में 'सक्सेरिया पुरस्कार', 1942 में 'स्मृति की रेखाएँ' के लिये 'द्विवेदी पदक' प्राप्त हुए। 'यामा' नामक काव्य संकलन के लिये उन्हें भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ। वे भारत की 50 सबसे यशस्वी महिलाओं में भी शामिल हैं।
- 1968 में सुप्रसिद्ध भारतीय फ़िल्मकार मृणाल सेन ने उनके संस्मरण 'वह चीनी भाई' पर एक बांग्ला फ़िल्म का निर्माण किया था जिसका नाम था नील आकाशेर नीचे।
- 16 सितंबर 1991 को भारत सरकार के डाकतार विभाग ने जयशंकर प्रसाद के साथ उनके सम्मान में 2 रुपये का एक युगल टिकट भी जारी किया है।

महादेवी वर्मा का योगदान

साहित्य में महादेवी वर्मा का आविर्भाव उस समय हुआ जब खड़ीबोली का आकार परिष्कृत हो रहा था। उन्होंने हिन्दी कविता को बृजभाषा की कोमलता दी, छंदों के नये दौर को गीतों का भंडार दिया और भारतीय दर्शन को वेदना की हार्दिक स्वीकृति दी। इस प्रकार उन्होंने भाषा साहित्य और दर्शन तीनों क्षेत्रों में ऐसा महत्त्वपूर्ण काम किया जिसने आनेवाली एक पूरी पीढ़ी को प्रभावित किया। शचीरानी गुर्टू ने भी उनकी कविता को सुसज्जित भाषा का अनुपम उदाहरण माना है। उन्होंने अपने गीतों की रचना शैली और भाषा में अनोखी लय और सरलता भरी है, साथ ही प्रतीकों और बिंबों का ऐसा सुंदर और स्वाभाविक प्रयोग किया है जो पाठक के मन में चित्र सा खींच देता है। छायावादी काव्य की समृद्धि में उनका योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। छायावादी काव्य को जहाँ प्रसाद ने प्रकृतितत्त्व दिया, निराला ने उसमें मुक्तछंद की अवतारणा की और पंत ने उसे सुकोमल कला प्रदान की वहाँ छायावाद के कलेवर में प्राण-प्रतिष्ठा करने का गौरव महादेवी जी को ही प्राप्त है। भावात्मकता एवं अनुभूति की गहनता उनके काव्य की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है। हृदय की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भाव-हिलोरों का ऐसा सजीव और मूर्त अभिव्यंजन ही छायावादी कवियों में उन्हें 'महादेवी' बनाता है। वे हिन्दी बोलने वालों में अपने भाषणों के लिए सम्मान के साथ याद की जाती हैं। उनके भाषण जन सामान्य के प्रति संवेदना और सच्चाई के प्रति दृढ़ता से परिपूर्ण होते थे। वे दिल्ली में 1983 में आयोजित तीसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन के समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं। इस अवसर पर दिये गये उनके भाषण में उनके इस गुण को देखा जा सकता है।

यद्यपि महादेवी ने कोई उपन्यास, कहानी या नाटक नहीं लिखा तो भी उनके लेख, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, भूमिकाओं और ललित निबंधों में जो गद्य लिखा है वह श्रेष्ठतम गद्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। उसमें जीवन का सम्पूर्ण वैविध्य समाया है। बिना कल्पना और काव्यरूपों का सहारा लिए कोई

रचनाकार गद्य में कितना कुछ अर्जित कर सकता है, यह महादेवी को पढ़कर ही जाना जा सकता है। उनके गद्य में वैचारिक परिपक्वता इतनी है कि वह आज भी प्रासंगिक है। समाज सुधार और नारी स्वतंत्रता से संबंधित उनके विचारों में दृढ़ता और विकास का अनुपम सामंजस्य मिलता है। सामाजिक जीवन की गहरी परतों को छूने वाली इतनी तीव्र दृष्टि, नारी जीवन के वैषम्य और शोषण को तीखेपन से आंकने वाली इतनी जागरूक प्रतिभा और निम्न वर्ग के निरीह, साधनहीन प्राणियों के अनूठे चित्र उन्होंने ही पहली बार हिंदी साहित्य को दिये।

मौलिक रचनाकार के अलावा उनका एक रूप सृजनात्मक अनुवादक का भी है जिसके दर्शन उनकी अनुवाद-कृत 'सप्तपर्णा' (1960) में होते हैं। अपनी सांस्कृतिक चेतना के सहारे उन्होंने वेद, रामायण, थेरगाथा तथा अश्वघोष, कालिदास, भवभूति एवं जयदेव की कृतियों से तादात्म्य स्थापित करके 39 चयनित महत्वपूर्ण अंशों का हिन्दी काव्यानुवाद इस कृति में प्रस्तुत किया है। आरम्भ में 61 पृष्ठीय 'अपनी बात' में उन्होंने भारतीय मनीषा और साहित्य की इस अमूल्य धरोहर के सम्बंध में गहन शोधपूर्ण विमर्ष किया है जो केवल स्त्री-लेखन को ही नहीं हिंदी के समग्र चिंतनपरक और ललित लेखन को समृद्ध करता है।

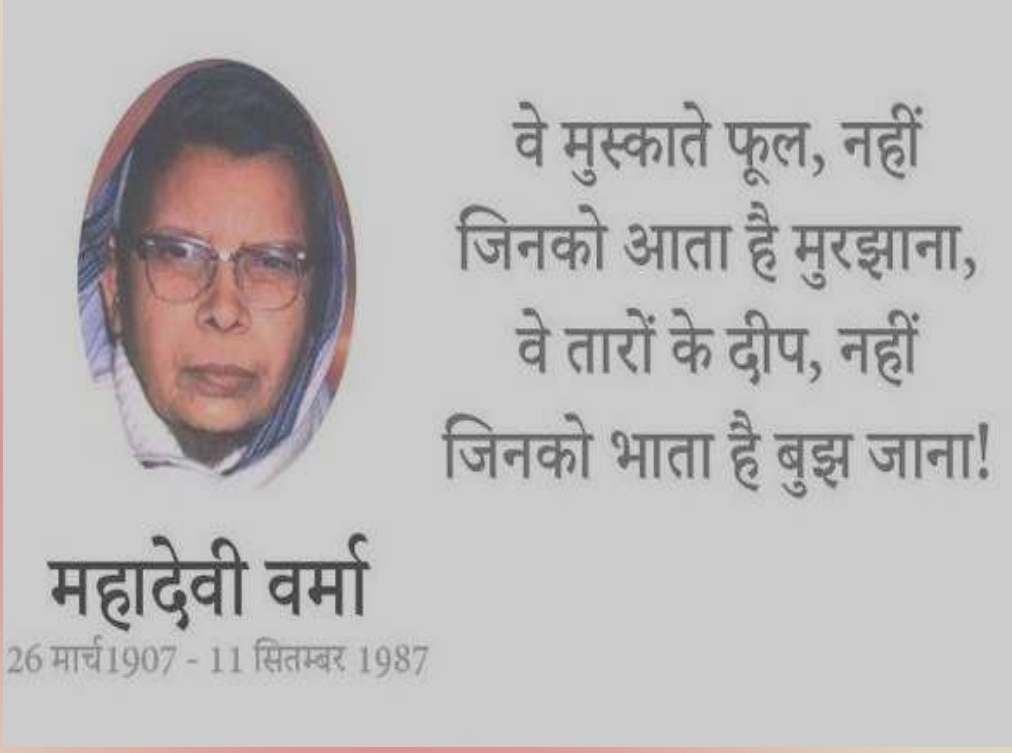

गिल्लू

गिल्लू महादेवी वर्मा की "मेरा परिवार" नामक कृति से लिया गया एक भाग है जिसमें लेखिका ने एक गिलहरी का मनुष्य के प्रति प्रेम भाव का वर्णन किया गया है यह उनके एक निजी जीवन के असल घटना पर आधारित है।

कहानी

सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है। उसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कन्धे पर कूदकर मुझे चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राणी की खोज है।

परन्तु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा कौन जाने स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने उपर आ गया हो ।

अचानक एक दिन सवेरे कमरे के बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौए एक गमले के चारों ओर चोंचों से छुवा-छुवौवल जैसा खेल खेल रहे हैं। यह कागभुशुण्डि भी विचित्र पक्षी है-एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित।

हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रुप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के। उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है। इतना ही नहीं, हमारे दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आने का मधु सन्देश इनके कर्कश स्वर ही में देना पड़ता है। दूसरी ओर हम कौआ और काँव-काँव करने की अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं।

मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी, क्योंकि गमले और दीवार की सन्धि में छिपे एक छोटे-से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गयी। निकट जाकर देखा, गिलहरी का छोटा-सा बच्चा है, जो सम्भवतः घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौए जिसमें सुलभ आहार खोज रहें हैं।

काकद्वय की चोंचों के दो घाव उस लघुप्राण के लिए बहुत थे। अतः वह निश्चेष्ट-सा गमले में चिपटा पड़ा था ।

सबने कहा कि कौए की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता, अतः इसे ऐसे ही रहने दिया जाय ।

परन्तु मन नहीं माना, उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में ले आयी, फिर रूई से रक्त पोंछकर घावों पर पेन्सिलीन का मरहम लगाया ।

रूई की पतली बत्ती दूध में भिगोकर जैसे-तैसे उसके नन्हें-से मुँह में लगायी, पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनो ओर लुढ़क गयीं ।

कई घण्टे के उपचार के उपरान्त उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा और आश्वस्त हो गया कि मेरी उँगली अपने दो नन्हें पंजों से पकड़कर, नीले काँच की मोतियों-जैसी आँखों से इधर-उधर देखने लगा।

तीन-चार मास में उसके स्निग्ध रोंएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करने लगीं।

हमने इसकी जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया और इस प्रकार हम उसे "गिल्लू" कहकर बुलाने लगे। मैंने फूल रखने की एक हल्की डलिया में रूई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया।

वही दो वर्ष "गिल्लू" का घर रहा। वह स्वंय हिलाकर अपने घर में झुलता और अपनी काँच के मनकों-सी आंखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता-समझता रहता था, परन्तु समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था।

जब मैं लिखने बैठती तब अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की उसे इतनी तीव्र इच्छा होती थी उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला।

वह मेरे पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से उतरता। उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता, जब तक मैं उसे पकड़ने के लिए न उठती।

कभी मैं "गिल्लू" को पकड़कर एक लम्बे लिफाफे में इस प्रकार रख देती कि अगले दो पंजे और सिर के अतिरिक्त सारा लघु गात लिफाफे के भीतर बन्द रहता। इस अद्‌भुत स्थिति में कभी-कभी घण्टों मेज पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर वह अपनी चमकीली आँखों से मेरा कार्यकलाप देखा करता।

भूख लगने पर चिक-चिक करके मानो वह मुझे सूचना देता है और काजू या बिस्कुट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफाफे से बाहर वाले पंजों से पकड़कर उसे कुतरता रहता।

फिर "गिल्लू" के जीवन का प्रथम वसन्त आया। नीम-चमेली की गन्ध मेरे कमरे में हौले-हौले आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक-चिक करके न जाने क्या कहने लगीं।

"गिल्लू" को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते देखकर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है।

मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच मुक्ति की साँस ली। इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते और बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी।

आवश्यक कागज-पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने के बाद कमरा बन्द ही रहता है। मेरे कॉलेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही "गिल्लू" जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा। तब से यह नित्य का क्रम हो गया।

मेरे कमरे से बाहर जाने पर "गिल्लू" भी खिड़की की खुली जाली की राह बाहर चला जाता और दिनभर गिलहरियों के झुण्ड का नेता बना, हर डाल पर उछलता-कूदता रहता और ठीक चार बचे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता।

मुझे चौंकाने की इच्छा उसमें न जाने कब और कैसे उत्पन्न हो गयी थी। कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में।

मेरे पास बहुत से पशु-पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परन्तु उनमें से किसी को मेरे साथ थाल में खाने की हिम्मत नहीं हुई है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता।

"गिल्लू" इनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार, बरामदा पार करके मेज पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाल के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता। काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीजें या तो लेना बन्द कर देता था या झूले के नीचे फेंक देता था।

उसी बीच मुझे मोटर दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाजा खोला जाता, "गिल्लू" अपने झूले से उतरकर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देखकर उसी तेजी से अपने घोंसले में जा बैठता। सब उसे काजू दे जाते, परन्तु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे ज्ञात हुआ वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कम खाता रहा।

मेरी अस्वस्थता में वह तकिये पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हें-नन्हें पंजों से ये मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता।

गर्मियों में जब मैं दोपहर में काम करती तो "गिल्लू" न बाहर जाता, न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गर्मी से बचने का एक सर्वथा नया उपाय खोज निकाला। वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठण्डक में भी।

गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अतः "गिल्लू" की जीवन-यात्रा का अन्त आ ही गया। दिनभर उसने न कुछ खाया और न बाहर गया। रात में अन्त की यातना में भी वह अपने झूले से उतरकर मेरे बिस्तर पर आया और ठण्डे पंजो से मेरी वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था। पंजे इतने ठण्डे हो रहे थे कि मैंने जाकर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयास किया, परन्तु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।

उसका झूला अतारकर रख दिया है और खिड़की की जाली बन्द कर दी गयी है, परन्तु गिलहरियों की नई पीढ़ी जाली के उस पार चिक-चिक करती ही रहती है और सोनजुही पर वसन्त आता ही रहता है। सोनजुही की लता के नीचे "गिल्लू" को समाधि दी गयी-इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी-इसलिए भी कि लघुगात का, किसी वासन्ती दिन, जुही के पीलाभ फूल में खिल जाने का विश्वास मुझे सन्तोष देता है।

जिंदगी समंदर की लहरों सी है

दिनेश दा खापरे,
लेखापरीक्षक,
वडोदरा मंडल

जिंदगी समंदर की लहरों सी है

तुफानों से लड़ती-झगड़ती,
किनारों का हाथ थाम ही लेती है,
क्यूंकी जिंदगी समंदर की लहरों सी है।

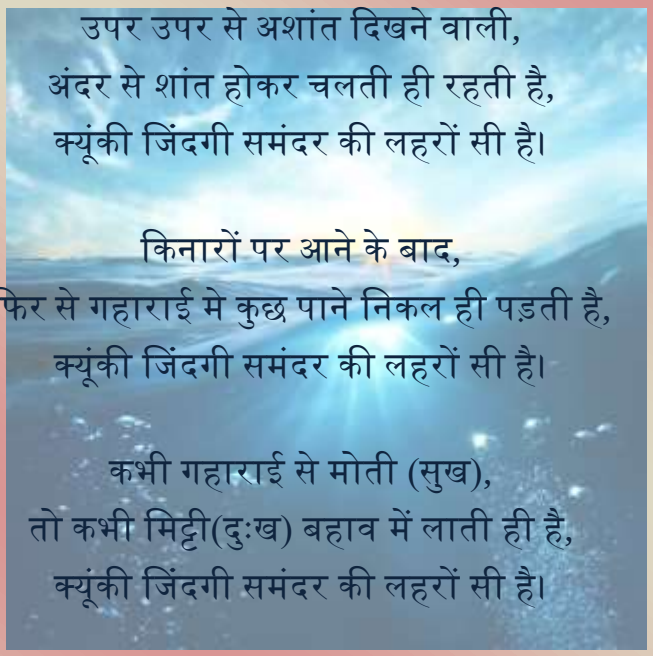

कभी अपनों से-तो कभी गैरों से टकराती,
अविरल चलती ही रहती है,
क्यूंकी जिंदगी समंदर की लहरों सी है।

भारत मेरी शान है

भाग्यश्री
पत्नी श्री दिनेश खापरे,
वडोदरा मंडल

भारत मेरी शान है,

कुदरत से भरी खदान है,

इसके हर कण–कण में जान है,

यहाँ की मिट्टी में जनमा हर जीव महान है।

भारत मेरी शान है,

सर पर पगड़ी सा स्वर्ण हिमालय है,

चरण-स्पर्श करता विशाल हिंद सिंधु है,

सीने में बहती नदियाँ मुरली सी तान हैं

भारत मेरी शान है,

तिरंगे के रंगों में अधिकार सबको समान है।

अशोक स्तंभ शांति की मिसाल है,

खेती-खलियान समृद्धि के निशान हैं,

भारत मेरी शान है,

यही हम सबका अभिमान है।

ऑनलाइन कक्षाएं- कितना फायदा, कितना नुक्सान

श्रीमती शिखा कुमारी,
बहुकार्यकर्मी, वडोदरा

प्रस्तावना- ऑनलाइन शिक्षा को सरल शब्दों में इंटरनेट आधारित शिक्षा भी कहा जा सकता है । कोरोना वायरस के बढ़ते प्रकोप के कारण जब विश्व के कई देशों में सरकार ने लॉकडाउन की घोषणा की तब स्कूल व कॉलेज के छात्रों का शिक्षण स्थगित हो गया। इसी समय ऑनलाइन कक्षा के माध्यम से शिक्षण व्यवस्था जारी रखी गई।

ऑनलाइन शिक्षा हालांकि कोई नई व्यवस्था नहीं है इसका प्रचलन 20वीं शाताब्दी से है । आज यह देश-विदेश के विभिन्न प्रांतों में प्रचलित है ।

ऑनलाइन शिक्षा क्या है?- ऑनलाइन कक्षा अथवा शिक्षण ऐसी पद्धति है जिसमें मोबाइल, टेबलेट अथवा कम्पयूटर के माध्यम से शिक्षक अपने छात्रों को शिक्षण देते हैं। इस नई पद्धति को अपनाने में शिक्षक व छात्र दोनों को ही शुरुआत में कई तकलीफें झेलनी पड़ी परन्तु समय के साथ इससे सांमजस्य बनाना एक मूलभूत आवश्यकता बन गई है।

ऑनलाइन में कई क्रैश-कोर्स भी प्रदान किए जाते हैं जिससे बच्चों के ज्ञान का विकास होता है। यह ज्ञान देश-विदेश के किसी भी स्थान से प्राप्त किया जा सकता है। दूरी की बाधा इसके आड़े नही आ पाती। कोई भी घर बैठे ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

ऑनलाइन कक्षा के लाभ- दूरी कभी ऑनलाइन शिक्षा के आड़े नही आती, घर बैठकर देश-विदेश के किसी भी कोने से इसका लाभ उठाया जा सकता है। शारीरिक रुप से चलने-फिरने में असमर्थ बच्चे भी इसका लाभ उठा सकते हैं। स्कूल, कॉलेज व टयूशन आने-जाने में व्यय होने वाला समय व खर्च दोनों ही इससे बच जाता है।

कक्षाओं के बीच में बातचीत एवं समय की औपचारिकता नहीं होती है। बच्चे अपनी क्लास चूक जाने पर भी रिकार्डिड लेक्चर देख सकते हैं।

ऑनलाइन कक्षा की हानि- भारत जैसे बड़े देश में कई श्रेणियों के लोग रहते है, कुछ लोग (खासकर पिछड़े वर्ग) के लोग इसका फायदा नई उठा पाते हैं। ऑनलाइन शिक्षा की वजह से माता-पिता बच्चों की सही रुप से निगरानी नहीं कर पाते हैं। ऑनलाइन कक्षा में अधिक

बच्चे होने पर शिक्षक सभी पर समान ध्यान नही दे पाते हैं और बच्चों का संदेह भी नही मिट पाता है।

ऑनलाइन पढ़ाई के वक्त घंटों छोटी स्क्रीन का इस्तेमाल करने से आंखों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है और बच्चों को छोटी उम्र में ही चश्मा लग जाता है।

<u>उपसंहार</u>

ऑनलाइन कक्षा एक नवीन पद्धति है जो भविष्य में और भी लाभदायक बनने वाली है, इसे देश-विदेश के हर कोने में हर बच्चे तक पहुँचाने का प्रयत्न करना चाहिए। कई राज्यों में इसकों बढ़ावा देने के लिए कई योजनांए चलाई गई हैं, राजस्थान में बच्चों को व्हाटसैप के माध्यम से नोटस भेजें जाने वाला पोर्टल बनाया गया है, पश्चिम बंगाल में विद्यार्थियों को टेबलेट दिए गए हैं। शिक्षकों को भी ऑनलाइन कक्षा में पढ़ाने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, इस नई पद्धति के नुक्सान को नजरन्दाज़ करने के बजाय इसमें सुधार लाने की कोशिश की जानी चाहिए।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का
सरलतम स्तोत्र है – सुमित्रानंदन पंत

ग्लोबल वार्मिंग

एन. के. गुप्ता,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

धरती के वातावरण में तापमान में हो रही विश्वव्यापी बढ़ोतरी को ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं। आज के युग में मनुष्य दिनों-दिन कई तरह की नई-नई तकनीकें विकसित करता जा रहा है। विकास के लिए मनुष्य कई तरह से प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहा है जिसकी वजह से प्रकृति के संतुलन को बचाय रखने में बहुत मुश्किल हो रही है। इस सबके कारण धरती को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

जिसमें से एक ग्लोबल वार्मिंग,एक बहुत ही भयंकर समस्या है। ग्लोबल वार्मिंग हमारे देश के लिए ही अपितु पूरे विश्व के लिए बहुत बड़ी समस्या है। सूरज की रोशनी को लगातार ग्रहन करते हुए हमारी पृथ्वी दिनों-दिन गर्म होती जा रही हैं। जिससे वातावरण में कार्बन-डाइआक्साइड का स्तर बढ़ रहा है। इस समस्या से ना केवल मनुष्य बल्कि धरती पर रहने वाले प्रत्येक प्राणी को नुक्सान पहुंच रहा है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण

ग्रीन हाउस गैस- ग्लोबल वार्मिंग के कारण होने वाले जलवायु परिवर्तन के लिए सबसे अधिक जिम्मेवार ग्रीनहाउस गैसें हैं। ग्रीन हाउस में वे गैसें होती हैं जो सूर्य से मिल रही गर्मी को अपने अंदर सोख़ लेती हैं। ग्रीन हाउस गैसों में सबसे ज्यादा कार्बन-डाइआक्साइड है जिसे हम जीवित प्राणी अपनी सांस के साथ उत्सर्जित करते हैं।

प्रदुषण- वायुमंडल के तापमान में होने वाली लागातार वद्धि के कारणों में प्रदुषण भी एक कारण है। प्रदुषण कई तरह का होता है- वायु प्रदुषण, जल प्रदुषण, भूमि प्रदुषण, ध्वनि प्रदुषण आदि। प्रदुषण के कारण वातावरण में कईं तरह की गैंसे बनती जा रहीं हैं, ये गैंसे तापमान वृद्धि का मुख्य कारण है और प्रदुषण इन गैंसों को बनने में सहायक होता है।
जनसंख्या वृद्धि- जनसंख्या वृद्धि भी वायुमंडल के तापमान को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं क्योंकि एक रिपोर्ट के अनुसार ग्लोबल वार्मिंग में 30 प्रतिशत योगदान मानवजनित कार्बन उत्सर्जन का है।

औद्योगिकीकरण- शहरीकरण को बढ़ावा देते हुए शहरी इलाकों में कारख़ाने और कम्पनियां लगातार बढ़ती जा रहीं हैं जिससे विषैले प्रदार्थ, प्लास्टिक रसायन, धुँआ आदि निकलता है। ये सभी पदार्थ वातावरण को गर्म करने का कार्य बखूबी करते हैं।

जंगलों की कटाई- मनुष्य अपनी सुविधाओं के लिए प्रकृति से छेड़छाड़ करता रहता है। मनुष्य ने धरती के वातावरण को संतुलित बनाए रखने वाले पेड़-पौधों को काटकर वातावरण को अत्यधिक गर्म कर दिया है जिसके कारण समुद्र का जल स्तर लगातार बढ़ रहा है। इससे दुनिया के कई हिस्से पानी में डूब जांएगे व भारी तबाही आने की आशंका है।

ग्लोबल वार्मिंग की रोकथाम के उपाय-

सरकारी एजेंसियों, व्यापारिक नेतृत्व, निजी क्षेत्रों और एन.जी.ओ. आदि के द्वारा व्यापक जागरुकता अभियान चलाया जाना चाहिए। वाहनों और उद्योगों से हो रहें हानिकारक गैंसों के उत्सर्जन को रोकने के लिए समाधान किए जाने चाहिए जिससे की ग्लोबल वार्मिंग को कम किया जा सकें। जो चीजें ओजोन परत को हानि पहुंचाती है उन सभी चीजों पर प्रतिबंध लगाना चाहिए। पेड़ो की कटाई को रोककर अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए। पैकिंग करने वाले प्लास्टिक के साधनों का कम प्रयोग किया जाना चाहिए। जल संरक्षण और वायु संरक्षण के लिए प्रयास करने चाहिए। जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण के उपाय किया जाने चाहिए।

गुज़र रही है जिंदगी

गुलाब सिंह बामनिया,
व.ले.प, वड़ोदरा

गुज़र रही है जिंदगी

गुज़र रही है जिंदगी ऐसे मुकाम से,
अपने भी दूर हो जाते है,
जरा से जुकाम से।
तमाम कायनात एक कातिल बीमारी की
दवा हो गई।
वक्त ने ऐसा सितम ढाया कि दुरियां ही दवा हो गई है,
आज सलामत रहें तो कल की सहर देखोगे,
सांसो के चलने के लिए कदमों का रुरना जरुरी है,
घरों में बंद रहना दोस्तों,
हालात की मजबूरी है।
अभी न संभले तो बहुत पछताएंगे,
सुखे पत्ते की तरह वक्त की आंधी में बिखर जांएगे।
यह जंग तेरी या मेरी नही हम सबकी है,
अपने लिए नहीं अपनों के लिए जीना है,
आज महफूज़ रहे कल मिल के खिलखिलाएगें,
गले भी मिलेंगे और हाथ भी मिलाएगे।

हिंदी का प्रचार और विकास कोई रोक नही सकता – पंडित गोविंद

टॉम एंड जेरी

नंदिनी कासारे- व.ले.प.
वडोदरा

इन दिनों कई चैनलों पर अलग-अलग कार्टून (हास्यचित्रों) की धूम मची है, परंतु आज भी सबका लोकप्रिय कार्टून टॉम एंड जेरी है। यह कार्टून सन 1940 से प्रसारित किया जा रहा है, इसमें एक चूहा है जोकि एक बिल्ले की नाक में हमेशा दम कर के रखता है। इसे देखकर कोई भी हंसी से लोटपोट हुए बिना नही रहता।

टॉम एंड जेरी की शुरुआत विलियम हेन्ना और जोसेफ बरेरा ने की थी। ये दोनों 1930 में एम जी एम में पुस्सी गेट्स द बुट्स नामक कार्टून फिल्में बनाते थे परंतु इन्हें कोई सफलता हासिल नही हुई, 1940 में एम जी एम के मालिक ने उन्हें कुछ नया करने का आदेश दिया तो उन्होंने पुस्सी गेट्स द बुट्स पर आधारित चूहें और बिल्ले के ऊपर कार्टून बनाया, फिर उसका नाम रखने के लिए स्टूडियों में एक प्रतियोगिता रखी गई जिसमें जॉन गार्ड नाम के व्यकित ने टॉम एंड जेरी नाम का सुझाव दिया और फिर 1941 में टॉम एंड जेरी का प्रसारण शुरु किया गया। विलियम कथा लिखते और जोसेफ चित्र बनाते थे,उनकी बनायी सीरीज इतनी प्रसिद्ध हुई कि उसको कई बार आस्कर अवार्ड भी दिए गए।

1957 में एम जी एम ने अपना स्टुडियो बंद कर दिया, फिर विलियम और जोसेफ ने अपना खुद का स्टूडियो शुरु किया और ऐसे कार्टून बनाना जारी रखा जिसमें कुछ नया किया गया हो । टॉम एंड जेरी की दुशमनी ही नही बल्कि दोस्ती की भी श्रेणियां बनाई गई।

टॉम एंड जेरी के पुराने नाम जेसपर और जिनक्स थे, 14 बार इन्हें आस्कर आवार्ड के लिए नामित किया गया एवं 7 बार आस्कर अवार्ड दिया भी गया। वैसे तो बिल्ली चूहें को सताती है पर यहाँ चूहां बिल्ली को सता रहा है।

21 अप्रैल 2014 से इसे भारत में कार्टून नेटवर्क चैनल पर दिखाना शुरु किया गया । भारत में भी इसे काफी लोकप्रियता हासिल की, इतना ही नही इस पर एक गाना भी बनाया गया। टॉम एंड जेरी को स्ट्रैस बूस्टर के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इसे देखकर इंसान अपनी चिंताए कुछ देर के लिए भूल कर खुश रहता है। बच्चों से बूढ़ो तक सभी का यह पसंदीदा कार्यक्रम बन चुका है। पिछले 78 सालों से यह सबका मनोरंजन कर रहा है एवं

पिछली 3 पीढ़ियों से लोग विश्व के अलग-2 हिस्सों में अपनी भाषा में इसे देखते आ रहें हैं और आज भी सारे छोटे बड़ों के दिलों पर यह राज कर रहा है। इसमें कोई संशय नही है कि शायद ही कोई ऐसा हास्य चलचित्र हो जिसने इतनी प्रसिद्धि प्राप्त की हो।

महिला सशक्तिकरण

अखिलेश सिंह,
सलेपअ

महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य है- महिलाओं को समस्त रुप से सशक्त बनाना अर्थात सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक इत्यादि समस्त आवश्यक संदर्भ में महिलाओं को सशक्त बनाना ताकि वे समाज व परिवार में सम्मानजनक स्थान पा सकें , आत्म निर्णय के अधिकार का उपयोग कर सकें, आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर हो, लैंगिक रुप से सबल समझी जाएं तथा पुरुषों से अलग, अपनी स्वतंत्र पहचान कायम कर सकें।

सशक्तिकरण के लिए यह भी आवश्यक है कि समाज में जिन अधिकारों का उपभोग पुरुष कर रहें हैं, वे सभी अधिकार समान रुप से महिलाओं को भी प्राप्त हो तभी उन्हें पुरुषों के बराबर सम्मान प्राप्त हो पायेगा।

उल्लेखीय है कि प्राचीन, मध्य व आधुनिक तीनों कालों में महिलाओं की भुमिका महत्वपूर्ण रही है। यही नही समाज की प्रारम्भिक इकाई, परिवार में तो नारी केंद्रीय भूमिका में होती है। वह परिवार को तो संभालती ही है, साथ ही प्रथम गुरु के रुप में बच्चों को अच्छे संस्कार भी देती है, जो कि भविष्य में देश के कर्णधार बनकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देते हैं, इससे बाहर भी नारी की भूमिका कमतर नही है। उसने अंतरिक्ष में उडान भरकर पुरुषों के दंभ को तोड़ा है। अलग-अलग भूमिकाओं में वह राष्ट्र व समाज में अपना योगदान देकर अपनी उपादेयता को सुनिश्चित कर रही है।

अब प्रश्न उठता है कि इतनी महत्वपूर्ण भूमिका व योगदान के बावजूद भी महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता आज क्यों है? इसके उत्तर में कहा जा सकता है कि पुरुष वर्चस्व युक्त समाज में प्रारंभ से ही महिलाओं की स्थिति को हीन बना दिया गया है। यही

नही, समाज लैंगिक असमानता के आधार पर उनको मानव जीवन के लिए आवश्यक मूलभूत अधिकारों से वंचित रखकर लैंगिक रुप से कमजोर बना देता है।
इसके अतिरिक्त समाज में उन्हें अच्छी शिक्षा, अच्छा स्वास्थ्य तथा अच्छा भोजन भी नही मिलता। समाज लड़कों को अपना निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र बनाता है जबकि महिलाओं को अपने बारें में निर्णय लेने का भी अधिकार नही देता। लिंग परीक्षण, भ्रूर्ण हत्या, लड़के के जन्म पर प्रसन्न होना तथा लड़की के जन्म पर दु:खी होना, लड़का न पैदा होने तक बच्चे पैदा करते जाना, महिलाओ के प्रति समाज की निकृष्ठ मानसिकता का परिचायक है। यह निकृष्ट मानसिकता ही महिलाओं को सामाजिक रुप से निर्बल बनाती है।
यही नहीं, उन्हें उत्पादन के साधनों पर अधिकार नही दिया गया है। उन्हें अधिकार सम्पन्न पद नहीं दिए जाते। उन्हें घर की चारदीवारी में ही कैद कर दिया जाता है। इस सब के परिणामस्वरुप वे पुरुषों पर आर्थिक दृष्टि से निर्भर हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त राजनीति की नीति नियामक इकाई तक उनकी पूर्णत: पहुंच नही है जो महिलाएं राजनीति के उच्च पदों तक पहुंची हैं उनमें ये ज्यादातर राजनीति के बहू-बेटी-पत्नी वाद का ही परिणाम हैं।
इस प्रकार हम कह सकते है कि विभिन्न स्तर पर महिलाओं के प्रति असमानता का व्यवहार करके उन्हें आशक्त तथा निर्बल बना दिया गया है। यही कारण है कि वर्तमान मानववादी दृष्टिकोण के संदर्भ में महिला सशक्तिकरण की धारणा प्रासंगिक हो गई है।
अब एक प्रश्न यहाँ यह उठता है कि महिला सशक्तिकरण केवल एक नारा ही है या इसकी प्राप्ति के लिए कुछ प्रयत्न भी किए गए हैं?
इसके जवाब में कहा जा सकता है कि आजादी के बाद भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए कई प्रबंध किए गए है। भारतीय संविधान लैंगिक समानता के संदर्भ में कई उपबन्ध समहित किए हुए है। अनुच्छेद-14 महिलाओं को कानून के समक्ष समानता प्रदान करता है। अनुच्छेद-16 के अनुसार महिलाओ को लोक सेवा में बिना भेदभाव के अवसर की समानता प्राप्त है। इसके अतिरिक्त अनुच्छेद-19 के अनुसार महिलाओं को भी समान रुप से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, अनुच्छेद-23 के अनुसार नारी के क्रय-विक्रय तथा बलात् पर रोक, अनुच्छेद-42 में महिलाओं के लिए प्रसूति सहायता की व्यवस्था का उपबंध किया गया है। यही नही मौलिक कर्तव्यों में एक प्रावधान यह भी है कि प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं। 73वें व 74वें संविधान संशोधन के अंतर्गत महिलाओं को ग्रामीण तथा शहरी निकायों में आरक्षण प्रदान किया गया है।
उपर्युक्त संवैधानिक प्रावधानों के अंतर्गत भारतीय संसद ने महिलाओं की स्थिति सशक्त बनाने के लिए समय-समय पर विभिन्न अधिनियम पारित किये है। इन अधिनियमों में प्रस्तुत है-विशेष विवाह अधिनियम-1954, हिंदु उत्तराधिकार अधिनियम-1956, समान पारिश्रमिक अधिनियम-1986, सती निषेध अधिनियम-1987, प्रसव पूर्व निदान तकनीक अधिनियम-1994, घरेलु हिंसा अधिनियम-2008 इत्यादि, इन अधिनियमों के माध्यम से महिलाओं के लिए समान कार्य के लिए समान वेतन, पैतृक संपत्ति के अधिकार, वेश्यावृति पर रोक, घरेलू हिंसा से संरक्षण जैसे कानून बनाए गए हैं।

यही नही, महिला सशक्तिकरण को मूर्त रुप देने के लिए केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों ने विभिन्न महिला केंद्रित योजनाओं का संचालन भी किया, जिनमें प्रमुख हैं- स्वधार योजना, स्वशक्ति योजना, स्वालंबन योजना, स्वयंसिद्द योजना, शक्ति योजना, वंदेमातरम योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना इत्यादि।

उपर्युक्त समस्त तथ्यों के अध्ययन के आधार पर यह अवश्य कहा जा सकता है कि आजादी के बाद भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए विशेष प्रयास किए जा रहें हैं। यही नही उन प्रयासों के प्रभाव के फलस्वरुप नारी से जुड़ा परिदृश्य भी जरुर बदला है। लेकिन इसके बावजूद भी भारतीय नारी आज भी पूर्ण:त सशक्त नहीं हुई है। आज भी उसके पास समस्याओं का अंबार है। परिवार, समाज व कार्यस्थलों पर उसके साथ लैंगिक भेदभाव, शोषण एवं अस्मिता पर प्रहार की घटनांए तो समूची मानवता को शर्मशार करती रहती हैं।

अत: आवश्यकता इस बात की है कि महिला सशक्तिकरण के लिए किए गए उपायों को वास्तविकता के धरातल पर उतारा जाए ताकि महिलाओं को इसका सही लाभ मिल सकें। यही नहीं, सशक्त बनने के लिए नारी को स्वयं भी आगे आना होगा।उसे अपने शक्ति स्वरुपा चरित्र को चरितार्थ करना होगा तथा अपने अधिकारों एवं शक्तियों के प्रति जागरुक होना पड़ेगा। उसे साबित करना होगा कि वह अबला नहीं बल्कि सबला है।इससे भी अधिक महिला सशक्तिकरण के लिए यह परम आवश्यक है कि समाज में परिवर्तन भी आए। ‘ यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता ‘ की भावना समाज के मन मस्तिष्क में अंदर तक समाहित होनी चाहिए। हमें यह नही भूलना चाहिए कि नारी ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति तो है ही, समाज की धूरी भी है। उसकी उपेक्षा करके न तो कोई समाज सशक्त बन सकता है और न ही महान। यही कारण है कि समाज के सशक्तिकरण के लिए महिला का सशक्तिकरण प्राथमिक शर्त है और महिला सशक्तिकरण तभी संभव है जब हम नारी की महत्ता और गरिमा के अनुरुप आचरण करें। यदि समस्त उपायों और साधनों को वास्तविक के धरातल पर उतारने के पश्चात समाज की मानसिकता में भी सकारात्मक बदलाव आ जाये तो फिर जगत जननी , माँ स्वरुप, त्यागमयी साहस और धैर्य की प्रतिमूर्ति नारी स्वयं ही सशक्त हो जाएगी।

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है
कमलापति त्रिपाठी

उड़ना चाहता हूँ

जय प्रकाश,
आशुलिपिक, अहमदाबाद

स्वतंत्र पक्षी की भांति उड़ना चाहता हूँ,
दूर बैठे अपनों से जुझना चाहता हूँ,
खुला आकाश हो, खुशनुमा प्रकाश हो,
भोजन की तलाश हो, न मन में कोई आस हो,
बस अपनों को पेट भरना चाहता हूँ, स्वतंत्र पक्षी की भांति उड़ना चाहता हूँ,
दूर बैठे अपनों से जूझना चाहता हूँ।

सुबह घोंसले से निकलते हुए,
अपने मित्रों से मिलते हुए,
फूलों की भांति खिलते हुए,
जीवन की हर कठिनाई से लड़ना चाहता हूँ,
स्वतंत्र पक्षी की भांति उड़ना चाहता हूँ,
दूर बैठे अपनों से जुझना चाहता हूँ।

न मंजिल हो, न भटकने का डर,
न थकान हो, न धूप का असर,
आकाश की ऊंचाइयों में यू ही भटकना चाहता हूँ,
स्वतंत्र पक्षी की भांति उड़ना चाहता हूँ,
दूर बैठे अपनों से जुड़ना चाहता हूँ,

चिड़ियों की चहचहाट हो,
हवाओं की सरसराहट हो,
नदियों की कलकलाहट हो,
खुशनुमा हर एक क्षण हो,
जीवन के हर एक पल का आनंद,
उठाना चाहता हूँ,

स्वतंत्र पक्षी की भांति उड़ना चाहता हूँ,
दूर बैठे अपनों से जुड़ना चाहता हूँ।

शाम मध्यम प्रकाश में,
अपनों से मिलने की आस में,
मन में मीठी बात लिए,
सबके लिए कुछ सौगात लिए,
सबके जीवन में खुशियां भर देना चाहता हूँ,
स्वतंत्र पक्षी की भांति उड़ना चाहता हूँ,
दूर बैठे अपनों से जुड़ना चाहता हूँ।

कलम के सिपाही

विवेक कुमार
बहुकार्यकर्मी, अहमदाबाद

एक बिटिया मेरे पास आई,
सुनो कलम के सिपाही।
एक संदेश मुझे लिखकर दे दो,
वह दे दूंगी इस दुनिया को।
कपड़ों संग इसे सिलवा दूंगी,
हाथों पर या लिखवा लूंगी।
मैं भी इस देश की बेटी हूँ,
भक्षण मेरी गरिमा न हो।
शायद, तरस उसे आएगा,
पीड़ा को मेरी समझ जाएगा।
सुरक्षित करलूं स्वयं अपने को,
यह संदेश मुझे लिखकर दे दो।
मैं रोया, बिलखा, चिल्लाया,
दुआ है महफूज रहे तेरी काया,
संदेश अनेक बता चुका,
स्याही को अपनी सूखा चूका।
संदेश अंनतिम लिख लूंगा।
लड़ने का साहस भी है मुझमें,
सुन उसका हृद्य-परिवर्तन कर दूंगा।
शास्त्र वंचित इस राष्ट्र को,
जब गीता-ज्ञान के सम्मुख कर दूंगा।
वह समझ जाएगा तेरी पीड़ा को,
राष्ट्र- निर्माण का उठाया जो बीड़ा
वो
बेटी अमूल्य धरोहर है,
ना गर्भ मरे, ना अन्य कोई पीड़ा हो।

एक कवि

हुस्ने आलम
सलेपअ, अहमदाबाद

अकेले बैठकर कुछ गुनगुना रहा था,
खुद की लिखी कविता,
खुद को ही सुना रहा था।
जब मन में पंक्तियाँ चार आया,
तो सहसा ये विचार आया,
कवि बन जांऊ तो कैसा होगा,
नाम, सोहरत और पैसा होगा।
मारे खुशी के मैं झूम गया,
अपने हाथों को खुद ही चूम गया।
रास्ता भी मालूम था और मंजिल भी,
आसान हो गई जीवन की मुश्किल भी।
मन ही मन मैंने ठान लिया था,
खुद को कवि मान लिया था।
अब मेहनत दिन-रात कंरुगा,
जीवन भर कविता पाठ कंरुगा।
अब मैं, मेरी कविता और लोगों की ताली होगी,
हर दिन सुहाना और हर रात दिवाली होगी।
जीवन की हर मुश्किल आसान होगी,
कविता ही अब मेरी पहचान होगी।
रातभर जद्दोजहद किया,
तब जाके कुछ पंक्तियाँ कलम बद्ध किया,
क्या बताऊं कितनी मेहनत यार किया,
तब जाकर एक कविता तैयार किया।

कवि बनने की आश थी,
बस एक मौके की तलाश थी,
फिर मैंने ये काम किया, कवि
सम्मेलन में अपना नाम दिया।
जब संचालक ने आवाज दिया,
तब मैं अपनी कविता से

आगाज किया।
शुरु-शुरु में सब ठीक लगा,
लोगों के चेहरों पर मुस्कान बिछा।
सुन कविता मेरी लोग पस्त हुए,
सब अपने में ही व्यस्त हुए।
रुष्ट श्रोताओं ने जब
चप्पल फेंका, गरमाता माहौल
संचालक ने भापां।
इशारा कर मुझे भगा डाला,
और खुद ही मंच संभाला।
पल में सारा सपना तोड़ दिया,
अब कवि बनने की इच्छा मै छोड़ दिया।
जहां से शुरु किया वहीं खड़ा था,
भविष्य की चिंता में फिर पड़ा था।
खुद को एक विकल्प दिया,
फिर से एक संकल्प लिया।
फिर एक नया दौर लिखेंगे,
कविता न सही कुछ और लिखेंगे,
यही सोच कर सुबह से शाम किया,
कवि बनने की इच्छा को विराम दिया।

नींद

वीरेन्द्र प्रताप सिंह,
सलेपअ ,अहमदाबाद

चल उठ जा ओ नींद में सोने वाले,
आज हम तुम्हें जगानें आएं हैं।
भर ले जान अपने पैरों में तु,
हम तुम्हें भगाने आएं हैं।
सोते हुए सपनों से क्या हासिल होगा,
एक कल्पना होगी और काल्पनिक मंजिल होगी,
अंधकारमय भविष्य और जीवन मुश्किल होगा।
तेरे सपनों को हम हकीकत बनाने आएं हैं।
चल उठ जा ओ नींद में सोने वाले,
आज हम तुम्हें जगाने आएं हैं।
भर ले जान अपने पैरों में तु,
हम तुम्हें भगाने आएं हैं।
सोने वाले को कुछ न मिला है न मिल पाएगा,
निकल जाएगा जब समय हाथ से तब तू पछताएगा,
सब खो जाने पर बैठकर आंसू बहाएगा,
कल के पछतावे से हम तुम्हें बचाने आएं हैं।
चल उठ जा ओ नींद में सोने वाले,
आज हम तुम्हें जगाने आएं है।
भर ले जान अपने पैरों में तु,
हम तुम्हें भगाने आएं है।
डगर जीवन की इतनी आसान,
नहीं जो सोकर गुजर जाएगी,
चलना शुरु तो करो, कठिनाइयां नजर आएंगी,
पर इन कठिनाइओं से लड़कर तो,
देख जीवन सुधर जाएगा,
तुम्हें हम जीवन की कला सीखाने आएं हैं।
चल उठ जा ओ नींद में सोने वाले,
आज हम तुम्हें जगाने आएं हैं।
भर ले जान अपने पैरों में तु,
हम तुम्हें भगाने आएं है।

समय

भारती वर्मा,
वलेपअ,अजमेर

अच्छा हो या बुरा ,ये दौर निकल जाएगा,
आखिर समय ही तो है ,ये भी निकल जाएगा |
न रुका है कभी ,ना रुकेगा,
अपनी गति से चलता जाएगा |
ना तू कमजोर पड़ ,ना खड़ा रह अकड़,
अपनी गति से चला चल |
घास बन कर अपने को बचा ले,
जब मौसम संभल जाएगा ,तू भी खिल जाएगा,

आखिर समय ही तो है ,ये भी निकल जाएगा |
पंछी जो आज तेरे पास है ,ना जाने कब उड़ जाएंगे ,
कल तेरी तरह वो भी गीत नए गुनगुनाएँगे |
दुआ तेरी उन पर रहे ऐसा अपना आशीष देना,
लौट कर ना आए तो क्या, जहा भी रहे मुस्कुराएंगे,
समय आने पर वो भी खिल जाएंगे,
आसमान मे उन्हे उड़ता देख तू भी मुस्कुराएगा,

आखिर समय ही तो है ये भी निकल जाएगा |
आओ जी ले हम सब ,खुशिया बांट ले,
तू भी खुश रहे ,मै भी खुश रहु,
यही दुआ करें हम सब,
तो ये जीवन हसते हसते कट जाएगा,
समय ही तो है ये भी निकल जाएगा|

ध्वज का महत्व

प्रदीप कुमार, सलेपअ

सभ्यता की शुरुआत के बाद से ही ध्वज का एक विशेष महत्व रहा है जो कि अपनेपन, सुरक्षा व लोगों को एक साथ लाने का प्रतीक है। अनादिकाल से ही ध्वज भारतीय परम्परा, महिमा व धर्म का प्रतीक रहा है।

भगवान शिव के पुत्र कार्तिकेय के ध्वज सेवल कोडी से लेकर लंका की खोज में चले भगवान रामचन्द्र द्वारा उठाया गया सूर्य ध्वज, त्रेता युग में राजा युधिष्ठिर के सुनहरे चन्द्रमा ध्वज, जगन्नाथ मंदिर के ऊपर हवा के विपरीत दिशा में रहस्यमय तरीके से फहराता ध्वज, चारों युगों में हमारी सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा रहें हैं।

वास्तव में, भारतवर्ष में युगों से विभिन्न रुपों में झंडो व प्रतीकों का उपयोग करने की समृद्ध परम्परा रही है, इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नही कि भारत ने एक आधुनिक राष्ट्र के रुप में निखरते हुए भी इस परम्परा को जारी रखा है। इसलिए ध्वज न केवल भविष्य के लिए एक आशा है बल्कि हमारे समृद्ध अतीत का भी एक प्रतीक है।

किसी देश का राष्ट्रीय ध्वज उस देश की स्वतन्त्रता व गौरव का प्रतीक होता है। राष्ट्रीय ध्वज देश के नागरिकों में देशभक्ति की भावना भर कर उन्हें एकजुट करने का काम करता है। यही कारण है कि प्रत्येक देश का अपना एक राष्ट्रीय ध्वज होता है।

भारत में 22 जुलाई, 1947 को संविधान सभा ने हमारे राष्ट्रीय ध्वज को अंगीकर किया। अत: उस दिन जिस ध्वज को चुना गया वह बहुत से बदलावों के दौर से गुजर कर यहां तक पहुंचा था। इसे वास्तविक रुप से स्वतंत्रता सेनानी पिंगली वेंकैया द्वारा 1923 में डिजाइन किया गया था।

आज़ादी के बाद से अभी तक तिरंगे के साथ हमारा रिश्ता व्यक्तिगत की बजाय औपचारिक और संस्थागत रहा है। हाल ही में चल रहे हर घर तिरंगा अभियान से इस रिश्ते को व्यक्तिगत बनाने का एक प्रयास किया गया है। जिसके लिए ध्वज संहिता में उचित बदलाव किए गए ताकि भारत का प्रत्येक नागरिक राष्ट्रीय झण्डे को अपने घर ला सकें व आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर फहरा सके, जिससे वह राष्ट्रीय ध्वज व देश के साथ एक जुड़ाव महसूस करे व देश में एकता व सदभावना को बल मिले।

22 जुलाई, 1947 को संविधान सभा में राष्ट्रीय ध्वज पर प्रस्ताव के एक हिस्से के रुप में सरोजनी नायडु ने कहा, " याद रखो- इस ध्वज के नीचे ना कोई राजकुमार है न कोई किसान, ना कोई अमीर, ना कोई गरीब। वहाँ केवल कर्तव्य, जिम्मेंवारी व बलिदान है। चाहे हम हिंदू हो या मुस्लिम, सिख, ईसाई, पारसी या अन्य, हमारी भारतमाता एक है। पुनर्जन्म वाले भारत को पुरुष व महिलाएं उठो और इसे सलाम करो। "

गरम पानी पीने के फायदे

पूनम चंद सैनी,
सलेपअ

पाचन तंत्र में सहायक- यदि किसी को कब्ज और अपच होता हो या डायजेशन संबंधित समस्या हो तो उसे गुनगुना पानी पीना शुरु कर देना चाहिए। इससे डाइजेशन संबंधित समस्याएं दूर होती हैं।

इम्युनिटी बढ़ती है- रोजाना सुबह-सुबह खाली पेट एक गिलास गर्म पानी में नींबू डालकर पीने से शरीर की इम्युनिटी बढ़ती है।

दर्द में आराम मिलता है- अगर आपके पेट,जोड़ो,सिर या शरीर के किसी भी मसल्स में दर्द है तो गर्म पानी रोजाना पीने से इस समस्या से निदान पा सकते हैं।

साइनस की समस्या में आराम- अगर आपकों साइनस की समस्या है तो आपको रोजाना सुबह एक गिलास गर्म पानी पीने से इस समस्या में आराम मिलता है।

दांत के दर्द में आराम- दांत और मसूड़ों में दर्द लगे तो आपको रोजाना सुबह गर्म पानी पीना चाहिए, इससे दांत के दर्द में फायदा होगा तथा मसुड़ों की सूजन कम होगी किन्तु ज्यादा गर्म पानी ना पीये ऐसा करने से दांतों के इनेमल को नुक्सान पहुंच सकता है।

बॉडी डिटाक्स करता है- गर्म पानी पीने से शरीर का तापमान बढ़ता है जिससे ज्यादा पसीना निकलता है। पसीने के साथ शरीर में मौजूद हानिकारक टॉक्सिन भी शरीर से बाहर निकल जाते है और यदि गुनगुने पानी में नींबू या ग्रीन टी डालकर पीते है तो यह शरीर के अंदर के टॉक्सिन ओर भी आसानी से बाहर निकल जाते हैं।

मेटाबोलिज्म को बढ़ाना- रोजाना सुबह एक से दो गिलास गुनगुने पानी में नींबू और शहद डालकर पीने से शरीर का वजन कम होता है तथा मेटाबोलिज्म में सुधार होता है, पेट लम्बे समय तक भरा हुआ रहता है जिससे बेवजह भूख नही लगती है।

पीरियड के दर्द में आराम- महिलाओं को हर महीने होने वाले पीरियड्स के दर्द से परेशान होती है तो गर्म पानी को आप कुछ घंटों में चाय की तरह घूंट-घूंट कर पीए। इससे पेट की सिकाई होती है और क्रैंप में भी आराम मिलता है।

ज़ज्बात

भारत भूषण,
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

एक दिन बात ही बात से,
बात बढ़ गई थी ज़ज्बात से,
ज़ज्बात जो ज़ज्बात से जुड़ते गए,

फिर कई शिकवें गिले बनते गए।
उसने मुझसे कहा कि मैने तेरा क्या लिया,
फ़क्त तुझको दिया ही दिया।

क्या कम मेरा प्यार था,
या नसीबां बेज़ार था।
कयुं मै तुझसे मिला,
जो ये सिलसिला चला।
आज हालात कहां आ लगे,
कि हम एक दूसरे को मरने मारने चले,
क्या तुने सब कुछ भुला दिया,
क्या यही सिला दिया।
क्या मैं कुछ भी नहीं,
क्या मिलना मिलाना यही बस यही।

बात उसकी दिल के पार थी,
तकरीरें दमदार थी,
उम्मीदें उसकी कुछ ओर थी,
नज़र भी मुझसे दूर थी।
फिर मैने बांधा समां,
छेड़ा प्यार का फलसफ़ा।
सुन जिसको वो भावुक हुआ,
ऐसे चलने लगा फिर वही सिलसिला,

आज भी ऐसा होता है भारत कभी कभी,
इक दूसरे को देखते हैं हम बन अजनबी,
पर बस इस जिंदगी की रवानी रहें ,
और ये तल्खियां फ़क्त तल्खियां ही रहें,
बीत जाए लम्हां लम्हां यूहीं ,
और जिंदगी बस वो जिंदगी जो संग तेरे रही।

माँ

नीतिन कुमार परमार,
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

जन्म लिया तब क्या आता था, रोकर अपनी बात बतलाता था।
मैं तो कुछ न बोल पाता था, पर उस मां को सब समझ आता था।
भूख लगी तब भी रोया, दर्द हुआ तब भी रोया।
कुछ पड़ी जरूरत तो, सब रोकर बतलाता था,
मैं तो कुछ न बोल पाता था, पर उस मां को सब समझ आता था।

धीरे-धीरे बड़ा हुआ, अपने पैरों पे खड़ा हुआ,
कभी उठता था तो कभी गिर जाता था।
जब कहीं नहीं जा पाता था तो रोकर बतलाता था।
मैं तो कुछ न बोल पाता था, पर उस मां को सब समझ आता था।

ऊपर रखीं चीजें पाना हो, या दूर से कुछ भी लाना हो,
जब मन पंसद कुछ खाना हो, या फिर बाहर घूमने जाना हो।
जब ये भी बताना न आता था, तो रोकर ही बताता था,

मैं तो कुछ न बोल पाता था, पर उस मां को सब समझ आता था।

अब पहले जैसी बात नहीं

आशीष कुमार, व.ले.प.,
अजमेर

टाइम बदलगी हवा बदलगी,
बदले सारे समाज।
मानव जाति की सोच बदलगी,
बदले रीति रिवाज।।
100 रु. में शादी होती,
पर नरसी जैसा भात नहीं।
56 करोड़ की माया लुटाई,
अब पहले जैसी बात नहीं।।
भाई-भाई में प्यार घणा था,
मिलजुल कर सब रहते थे।
सुख-दुख की वे सारी बातें,
एक-दूजे से करते थे।।
अब प्रवासी बनकर रहते हैं,
होती आपस में मुलाक़ात नहीं।
मोबाइल को आयो जमानो,
अब पहले जैसी बात नहीं।।
पहले थे चेचक, भाव, बोदरी,
उल्टी, दस्त, खाँसी, छींक, बुखार।
देशी घूंटी काढ़ा देते,
वैद्य-हकीम करते थे उपचार।।
अब बिना जाँच के दवा नहीं,
और डॉक्टर लगाते हाथ नहीं।
कोरोना ने सबको डराया है,
अब पहले जैसी बात नहीं।।

है कलयुग में भी मोदी युग,
मोदी है तो मुमकिन है।
सबका साथ सबका विश्वास,
इस पर कर लिया यकीन है।।
बेशक तेल ने तेल निकाला है,
पर माने विपक्ष की बात को बात नहीं।
महंगाई और बेरोजगारी बढ़ रही है,
अब पहले जैसी बात नहीं।।
अब आयो कोरोना छायों कोरोना,
मिलना जुलना छोड़ दिया।
मन्दिर मस्जिद पुजा पाठ से,
दूर से ही हाथ जोड़ लिया।।
अपना पराया कुछ नहीं समझे,
मिलावे कोई हाथ नहीं।
सभी सुनो-भाई सज्जनों,
अब पहले जैसी बात नहीं।।

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है – रविशंकर शुक्ल

भोजन

हर्षिता सिंह ,
सुपुत्री श्री अरुण सिंह

भोजन है जीवन ,
इसे बर्बाद नहीं करना।

छोड़कर थाली में अन्न ,
इसे बेकार नहीं करना।।

आप खुशनसीब हैं जो,
दो जून की रोटी पाते हैं।

पूछो उन मजदूरों से जो,
पानी पीकर भूख मिटाते हैं।

और इस भूख को मिटाने के लिए,
कितने ही लोग मुजरिम बन जाते हैं।

जीवन की खुशियाँ छोड़ ,
जेलों में गुमनामी का जीवन बिताते हैं।

भगवान ने जब हम सभी को एक सा बनाया ,
तो फिर किसी को रोटी के लिए क्यों तरसाया?

आओ इस आज़ादी के अमृत महोत्सव वर्ष में ,
हम सब मिल कर यह प्रण करें ।

हमारे आस-पास कोई भूखा न रहे ,
जियो और जीने दो का सभी पालन करे ।

जिस दिन दुनिया से भूख मिट जाएगी,
सच्चे मायने में आज़ादी उसी दिन आएगी ।।

मेरे पिता

निष्ठा भसीन,
स.ले.प.अ./प्रशासन

इस दुनिया में आँखें खोलने से पहले से ही,
जो लाड़ बरसाए वो बादल आप हैं।
अपनी सर आँखों पर बिठाया जिसने हर पल,
बेपनांह प्यार वाला सागर हो आप।

जीवन के हर कदम में आगे बढ़ना सिखाया जिसने,
ऐसे कीमती सलाहकार हो आप।
जिस पहचान को सर उठाए जीते हैं हम,
उस पहचान के स्रोत और शान हो आप।

जीत में तो संग होते हैं सब,
मेरी हर हार में प्रोत्साहन हो आप।
घर तो बनता है ईंटों को जोड़,
उस घर के अस्तित्व का अभिमान हो आप।

आपार तूफ़ानों से भी भिड़ जाए जो,
ऐसा मजबूत आह्वान हो आप।
कड़कती धूप में ठंडी छाया,
अंधेरे में भी साथ निभाए जो,
ऐसा विश्वस्नीय साया हो आप।

नई उम्मीद से जोड़े रखे जो,
वैसी अटूट कड़ी हो आप।
हर ख्वाइश, हर सपने को पूरा करे जो,
वो जादुई छड़ी हो आप।

पिता का अतुल्य स्नेह जैसा ना कहीं मिलेगा,
अपनों को सुरक्षित जीवन प्रदान कर,
जिंदगी के अंगारों को सह जाए जो,
ऐसा पूजनीय देह ना मिलेगा।

चाहूँ सदा बनी रहे हर पिता के चेहरे पर,
प्यारी सी मुस्कराहट,
क्यूंकि आपके प्यार का एहसास,
सदा पास है, दूर नहीं है,
बह जाए आपकी आँखों से एक भी अश्रु,
यह बात कतई मंजूर नहीं है।

राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही
जोड़ सकती है – बालकृष्ण शर्मा
नवीन

राजस्थान– आमेर का किला

अरुण सिंह,
सलेपअ(प्रभारी)

राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थलों के अंतर्गत आने वाले किलों में से सबसे बड़ा आमेर का किला जयपुर से करीब 11 किलोमीटर की दूरी पर अरावली पहाड़ी की चोटी पर स्थित है। यह अपनी अनूठी वास्तुशैली और शानदार संरचना के लिए प्रसिद्ध है।

इसके आर्कषक डिजाइन और भव्यता को देखते हुए इस किले को विश्व विरासत की सूची में शामिल किया गया है। आमेर के किले का निर्माण 16 वीं शताब्दी में राजा मानसिंह प्रथम द्वारा करवाया गया था। जिसके बाद करीब 150 सालों तक राजा मानसिंह के उत्तराधिकारियों और शासकों ने इस किले का विस्तार और नवीनीकरण किया । बाहर से देखने पर यह मुगल वास्तुशैली से प्रभावित दिखाई पड़ता है, जबकि अंदर से यह किला राजपूत स्थापत्य शैली का नमूना है।

इसके बाद सन् 1727 में सवाई जय सिंह द्वितीय ने अपने शासनकाल के दौरान अपनी राजधानी आमेर से जयपुर को बना लिया, उस समय जयपुर की हाल ही में स्थापना की गई थी। आपको बता दें कि जयपुर से पहले कछवाहा (मौर्य) राजवंश की राजधानी आमेर ही था। भारत के सबसे प्रचीनतम किलों में से एक आमेर के किले को पहले कदीमी महल के नाम से भी जाना जाता था, इसके अंदर शीला माता देवी का मशहूर मंदिर भी स्थित है, जिसका निर्माण राजा मान सिंह द्वारा करवाया गया था।

कुछ लोगों का मानना है कि इस किले का नाम आमेर, भगवान शिव के नाम अंबिकेश्वर पर रखा गया था। जबकि, कुछ लोग इस किले का नाम मां दुर्गा के नाम, अंबा से लिया गया मानते हैं।

इस मशहूर और भव्य किले में अलग-अलग शासकों के समय में किले के अंदर कई ऐतिहासिक संरचनाओं को नष्ट भी किया गया तो कई नई

शानदार इमारतों का निर्माण भी हुआ, लेकिन कई आपदाओं और बाधाओं को झेलते हुए आज भी यह आमेर का किला राजस्थान की शान को बढ़ा रहा है और हमें हरपल इसके गौरवपूर्ण एवं समृद्ध इतिहास की याद दिलाता है।

यह किला मुगल और हिन्दू वास्तुशैली का नायाब नमूना है। इस किले के अंदर प्राचीन वास्तुशैली की गई है एवं इतिहास के प्रसिद्ध एवं साहसी राजपूत शासकों की तस्वीरें भी लगी हुई हैं। इस विशाल किले के अंदर बने ऐतिहासिक महल, उद्यान, जलाशय एवं सुंदर मंदिर इसकी खूबसूरती को दो गुना कर देते हैं।

राजस्थान के आमेर किले में पर्यटक इस किले के पूर्व में बने प्रवेश द्धार से अंदर आते हैं, यह द्वार किले का मुख्य द्वार है, जिसे सूरपोल या सूर्य द्वार कहा जाता है, इस द्वार का नाम पूर्व में स्थित सूर्य के उगने से लिया गया है। वहीं इस किले के अंदर दक्षिण में भी एक भव्य द्वार बना हुआ है, जो कि चन्द्रपोल द्वार के नाम से जाना जाता है। इस द्वार के ठीक सामने जलेब चौक बना हुआ है। जहां से सैलानी महल के प्रांगण में प्रवेश करते हैं।

जलेब चौक का इस्तेमाल पहले सेना द्वारा अपने युद्ध के समय शोर्य प्रदर्शित करने के लिए किया जाता था, जिसे महिलाएं सिर्फ अपनी खिड़की से देख सकती थी। जलेब चौक से दो तरफ सीढ़ियां दिखाई देती हैं, जिनमें से एक तरफ की सीढ़ियां राजपूत राजाओं की कुल देवी शिला माता मंदिर की तरफ जाती हैं। यह मंदिर इस भव्य किले के गर्भगृह में स्थापित है, जिसका ऐतिहासिक महत्व होने के साथ-साथ अपना अलग धार्मिक महत्व भी है, वहीं इस किले के जलेब चौक से दिखने वाली दूसरी तरफ की सीढ़ियां सिंहपोल द्वार की तरफ जाती हैं।

वहीं इस द्वार के पास एक बेहद आर्कषक संरचना दीवान-ए-आम बनी हुई है, जहाँ पहले सम्राट द्वारा आम जनता के लिए दरबार लगाया जाता था, जिसमें उनकी फरियाद सुनी जाती थी। पीले, लाल बलुआ एवं संगमरमर के पत्थरों से निर्मित इस भव्य किले के दक्षिण की तरफ गणेश पोल द्वार स्थित है, जो कि इस किले का सबसे आर्कषक और सुंदर द्वार है। इस द्वार में बेहतरीन नक्काशी एवं शानदार कारीगरी की गई है।

वहीं इस द्वार के ऊपर भगवान गणेश जी की एक छोटी सी मूर्ति शोभायमान है, इसलिए आमेर किले के इस द्वार को गणेश द्वार कहा जाता है। शाही ढंग से डिजाइन किए गए राजस्थान के इस सबसे बड़े किले के अंदर जाने पर दीवान-ए-खास, सुख महल, शीश महल समेत कई ऐतिहासिक और बेहद आर्कषक संरचनाएं बनी हुई है। किले की इन संरचनाओं में भी अद्भुत कलाकारी दिखती है।

इसके साथ ही विश्व धरोहर की लिस्ट में शामिल इस भव्य दुर्ग में एक चारबाग शैली से बना हुआ एक खूबसूरत उद्यान भी है, जो कि इस किले की शोभा को अपनी प्राकृतिक छटा बिखेरकर और भी अधिक सुंदर बना रहा है। राजस्थान की यह

प्राचीनतम राजपुताना विरासत करीब 2 किलोमीटर लंबे सुरंग मार्ग के माध्यम से जयगढ़ किले से भी जुड़ी हुई है।

आपातकालीन स्थिति में सम्राट के परिवार के सदस्यों को जयगढ़ दुर्ग तक पहुंचाने के लिए इस सुरंग का निर्माण किया गया था। इस किले के पास से जयगढ़ दुर्ग और इसके आसपास का बेहद खूबसूरत नजारा दिखाई देता है।

कई पुरानी संरचनाओं के नष्ट होने और कई संरचनाओं के निर्माण के बावजूद आज भी यह किला कई बाधाओं का सामना करते हुए बड़ी ही शान से खड़ा हुआ है मानो कह रहा हो, देखों! मै ही वो राजपूताना जिसका नाम सुनते ही शत्रु का लहु जम जाता था और मित्रों की भुजाएं फड़कने लगती थी, युद्धघोष कराते हुए बैरी को उसके अंत तक ले जाने को स्वर्णिम भारत का सुनहरा अतीत और नवीन भारत की अनुपम प्रेरणा।

हिन्दी की अंग्रेज़ी को चुनौती

नीरज ढींगरा,वलेपअ
अहमदाबाद

बोली हिन्दी अंग्रेज़ी से इतनी क्यों तू अकड़ती है,
अपनी बोली पर इतराती क्यों लोगों को जकड़ती है।

कितनी भी तू प्रचलित हो मुझसे न कर पाएगी मुक़ाबला,
मेरे जैसे धरोहर तेरे पास कहाँ, बता तू है कौनसी बला ।

अपने आपको तू बताती ऊंचा तेरी बड़ी अक्कड़ है,
पर मेरे मुक़ाबले तेरा कोष तो बिलकुल ही फक्कड़ है ।

चाचा, ताया, मामा हो या फुफड़ सब तेरे लिए अंकल हैं
किसका सम्बोधन कैसे करना नहीं तुझमें कोई अक्कल है ।

चाची, ताई, मौसी और बुआ सब तेरे लिए आंटी है,
इन रिश्तों की शब्दावली तूने अलग अलग नहीं बांटी है ।

केवल बोलने में ही नहीं उच्चारण में भी तू कच्ची है,
इस कारण तेरे अनेक शब्दों में अक्षरों की फिजूल खर्ची है।

लिखती क्रॉलेज पर उच्चारण नॉलेज है, 'क' तेरा फिज़ूल है,
ऐसे ही तेरे अनेक शब्दों का उच्चारण एकदम उलझलूल है।

बोलचाल की भाषा में तेरे कई शब्द हैं गूंगे,
क्यों लगाए फिजूल शब्द भला हम कैसे बूझेंगे ?

आधे शब्दों में जहां काम है चलता, पूरे का तू करती उपयोग,
जाकर अपना उपचार करले, लग गया है तुझ यह अजीब रोग।

तेरा मुझसे नहीं है कोई मुक़ाबला -जा बचाले अपनी आबरू,
जा घर जा कर कुछ शोध कर, फिर होना मुझसे रूबरू।

योग

विकास पद्माकर ब्रह्मक्षत्रिय
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

मेरे मन को योग है भाता,

निरोगी जीवन की राह है दिखाता।

जिसने जीवन में योग है अपनाया,

उस ने स्वस्थ तन और मन को है पाया।
यदि आप भी हो जमाने की भाग दौड़ के शिकार,

तो मेरी मानो, करो योग युक्त जीवनशैली को स्वीकार।

शुरुआत कहां से करें, इस विचार में क्यों गए हो अटक,

तो बस शुरू करो....., आलस को दो झटक।

पाँच मिनट ही सही, करो आज से ही शुरुआत,

धीरे धीरे, करते करते बनती जाएगी बात।

बिना पाउडर लाली के ही, चेहरे पर आएगा निखार,

सब पुछेंगे, अरे यार! , कैसे हुआ यह चमत्कार।

बी पी, शुगर को दिखाएं बाहर का रास्ता,

कोई जीवन बीमा नहीं है इससे सस्ता।

अपने साथ इस योग महफिल में करों औरों को भी शामिल,
एक सशक्त निरोगी भारत, यही है अपनी मंजिल।

स्वतंत्र होकर भी हम सब गुलाम हैं

शशिभूषण सिंह, सलेपअ

स्वतंत्र होकर भी हम सब गुलाम हैं
अपने झूठे उत्तर दायित्वों से बंधे हैं,
खोखले वादों से बंधे हैं
हमें बस इतनी सी बातों का मलाल है
क्योंकि स्वतंत्र होकर भी हम गुलाम हैं।

अपराधी नहीं हैं, अपराधबोधी हैं,
अपने विकास के खुद अवरोधी हैं।
हमें अपनी गलतियों से ज्यादा दूसरों का ख्याल है,
क्योंकि स्वतंत्र होकर भी हम गुलाम हैं।

चेतना तो विशाल विश्वास युक्त है,
बस चेतनाशुन्य का अभियुक्त हैं।
सिर्फ डींगे हाँककर अपनी जिंदगी खुशहाल है,
क्योंकि स्वतंत्र होकर भी हम गुलाम हैं।

हे भारतवासी, आज कैसा समय चल रहा है,
मानव अनैतिक भावनाओं में बेकार गल रहा है,
जहाँ देखों वही दुनिया भर का बवाल है,
क्योंकि स्वतंत्र होकर भी हम गुलाम हैं।

प्रकृति का जो कोई पर्याय नही है,
जीवन में गलत कर्मों का न्याय यहीं है,
हमेशा की तरह अनुत्तरित यह सवाल है,
क्योंकि स्वतंत्र होकर भी हम गुलाम हैं।

लोगों का गलती करने का चस्का लग गया है,
उत्तदायित्वहीन जीवन जीने का हिस्सा बन गया है
सच्चाई के साथ चलना ही कमाल है,
क्योंकि स्वतंत्र होकर भी हम गुलाम है।

हिन्दी दिवस 2021 में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं के नाम

हिन्दी मुहावरें, कहावतें एवं प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता

क्र .स .	नाम	स्थान
1	श्री दीपक सरोहा, लेखापरीक्षक	प्रथम
2	श्री नरेश लाल मीणा, सलेपअ	द्वितीय
3	अरुण कुमार शुक्ला, सलेपअ एवं वीरेंद्र प्रताप सिंह, सलेपअ	तृतीय

निबंध प्रतियोगिता (प्रवीणता प्राप्त प्रतिभागियों के लिए)

क्र.स .	नाम	स्थान
1	श्री आशीष कुमार, वलेप	प्रथम
2	श्री अरुण कुमार सिंह, सलेपअ	द्वितीय
3	श्री विजय प्रकाश मीणा, सलेपअ	तृतीय

निबंध प्रतियोगिता (कार्यसाधक प्रतिभागियों के लिए)

क्र .स .	नाम	स्थान
1	श्री एन. जी. पडवेकर, वलेपअ	प्रथम
2	श्री अर्जुन कामठे, सहायक पर्यवेक्षक	द्वितीय
3	श्रीमती सुनीता दोडमणि, लेखापरीक्षक	तृतीय

टिप्पण प्रतियोगिता

क्र .स .	नाम	स्थान
1	श्री आशीष कुमार, वलेप	प्रथम
2	श्री पंकज कुमार, डी.ई.ओ.	द्वितीय
3	श्री अरुण कुमार सिंह, सलेपअ	तृतीय

सुलेख प्रतियोगिता

क्र .स .	नाम	स्थान
1	श्री हरिदास भूरे, लिपिक/टंकक	प्रथम
2	श्रीमती प्राजक्ता परब, सलेपअ	द्वितीय
3	श्री विकास ब्रहमक्षत्रिय, सलेपअ	तृतीय

हिन्दी दिवस 2021 (प्रतिवेदन)

हिन्दी दिवस-2021 के अवसर पर दिनांक 14/09/2021 को मुख्यालय, चर्चगेट एवं सभी शाखा कार्यालयों में माननीय गृह मंत्री जी के संदेश को परिचालित कर शुभारंभ किया गया। पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी बैनर तथा हिन्दी भाषा में 10 सूक्तियों का पोस्टर बनाकर प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शित किया गया। इस अवसर पर सभी एकक कार्यालयों में हिन्दी मुहावरें, कहावतें एवं प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं को जारी रखते हुए दिनांक 17/09/2021 को निबंध प्रतियोगिता, दिनांक 21/09/2021 को टिप्पण प्रतियोगिता, दिनांक 24/09/2021 को सुलेख प्रतियोगिता तथा अंत में दिनांक 30/09/2021 को प्रश्नावली प्रतियोगिता (विषय: सामान्य हिन्दी तथा सामान्य ज्ञान) का आयोजन किया गया।

हिन्दी समारोह का शुभारंभ श्री सतीश एन. वासनिक, निदेशक ने दीप प्रज्वलित कर किया। तत्पश्चात, श्रीमती रूपा शेणोय, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी ने पुष्प गुच्छ देकर निदेशक महोदय का स्वागत किया।

श्री अखिलेश सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी ने हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर माननीय गृह मन्त्री जी के संदेश का पठन किया। इस अवसर पर निदेशक महोदय द्वारा कार्यालय का वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के 49वां अंक का विमोचन तथा ई-पत्रिका का प्रकाशन किया गया।

श्री आभाष कुमार, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन) ने वर्ष 2020-21 में कार्यालय में हिन्दी में किए गए कार्य का संक्षिप्त विवरण दिया। राजभाषा अधिनियम एवं नियमों का निर्देशों के अनुसार अनुपालन किया जाता है तथा ज्यादा से ज्यादा टिप्पणी, मसौदे, और पत्राचार आदि जैसे कार्य हिन्दी में किया जाए इसके लिए कार्यालय में पारंगत पाठ्यक्रम की कक्षाएँ तथा प्रत्येक तिमाही हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। वर्तमान स्थिति को देखते हुए राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें ऑनलाइन माध्यम से की जा रही है।

निदेशक महोदय ने अपने कर-कमलों से हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये तथा वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' में अपनी मौलिक रचनाओं का योगदान देने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी धन्यवाद दिया।

इस अवसर पर निदेशक महोदय ने अपने सम्बोधन में कहा कि हम सब को गर्व होना चाहिए कि हिन्दी विश्व में बोली जानेवाले लोगों में भाषाई रूप से तीसरा स्थान रखता है। हिन्दी में टिप्पणी, आवेदन तथा फाइलों पर हिन्दी में ज्यादा काम कर इसका क्रियान्वयन कर सकते हैं। अभिव्यक्ति पत्रिका में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों तथा उनके परिवार के सदस्यों को भी भाग लेना चाहिए। कार्यालय के मर्यादा को बनाए रखें तथा सभी लोग निर्भीक तथा सहज रूप में अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें। निदेशक महोदय ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए अपने सम्बोधन को विराम दिया।

अंत में श्री शशि भूषण सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी ने निदेशक महोदय और उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस समारोह में भाग लेने के लिए धन्यवाद देते हुये निदेशक महोदय की अनुमति से हिन्दी पखवाड़े का समापन किया।

मंडल कार्यालय रतलाम में हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी कार्यशाला का आयोजन।

वर्ष 2017, 2018 एवं 2019 की अभिव्यक्ति पत्रिका की तस्वीरें।

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग ✦ INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अतीत के चलचित्र

मैं नीर भरी
दु:ख की बदली

प्रकाशक

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
पश्चिम रेलवे, चर्चगेट,
मुंबई-400020

संध्यागीत

यह मंदिर का दीप